विचार बिन्दु

पराधीनता समाज के समस्त मौलिक निमयों के विरुद्ध है। –मान्तेस्क्यु

मीडिया में बज़ बनाकर हक़ीकतें बदलने की कोशिश

लोकतंत्र की आत्मा लोक कल्याणकारी शासन में निहित होती है। एक सुशासित राज्य में सरकार करदाताओं के धन से ऐसी नीतियां और योजनाएं बनाती हैं जिनका लक्ष्य आम नागरिक के जीवन में ठोस, स्थायी और न्यायपूर्ण परिवर्तन तथा समानता लाना होता है। इस काम के लिए भारतीय संविधान में विधायिका की व्यवस्था है, जिसमें निर्वाचित जन प्रतिनिधि विधियां, नीतियां और कार्यक्रम बनाते हैं जिन्हें कार्यपालिका क्रियान्वित करती है। किंतु इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक के बीत रहे काल में आज एक विचित्र और चिंताजनक हालत सामने है। जन-कल्याण के नाम पर घोषित अनेक कार्यक्रम ज़मीन पर दिखाई नहीं देते, जबकि सरकारें मीडिया में बज़ बनाए रखने के लिए भव्य ईवेंट, उद्घाटन, शिलान्यास, उत्सव और प्रचार अभियानों पर अपना अधिकतम ध्यान और संसाधन झोंक रही हैं। यह प्रवृत्ति न केवल कार्यपालिका को शिथिल कर रही है, बल्कि व्यवस्था में पहले से मौजूद भ्रष्टाचार को और गहरा कर रही है। राजस्थान सरकार में भारतीय जनता पार्टी के दो वर्ष पूरा होने के उपलक्ष में जश्न मनाए जा रहे हैं। राजधानी में सत्ता के शीर्ष से शासन के नीचे तक के तंत्र को स्पष्ट हिदायतें भेजी गई हैं कि इस जश्न के लिए रोज कौन-कौन से ईवेंट किए जाने हैं। इसके साथ ही प्रतिदिन चौकसी और निगरानी की जा रही है कि जो बताया गया है वह हो रहा है या नहीं। यहां तक कि कार्यपालिका के प्रमुख मुख्य सचिव खुद जिला अधिकारियों से ऑनलाइन फीडबैक प्राप्त कर रहे हैं और निर्देश दे रहे हैं। अधिकारियों व अन्य कर्मियों को हिदायतें दी गई हैं कि जो भी ईवेंट हो उसके चित्र और वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किए जाए। प्रचार विभाग की सोशल मीडिया पोस्टों को आगे अपने स्टार पर बढ़ाया जाए। इस की सतत निगरानी होती है और चूक पर फटकारें पड़ती है। चाहना यह है कि धरती पर कोई काम हुआ हो या न हो उसके प्रचार का तूफान खड़ा कर दिया जाए। जो ईवेंट किए जा रहे हैं उनके परिणामों पर नहीं बल्कि उनके भरपूर प्रचार किए जाने पर एकमात्र जोर है। मान लिया गया है कि धुआं-धार प्रचार मतदाताओं तक पहुंच कर सत्तारूढ़ दल की मदद करेगा। मुख्य सचिव ने अपनी एक वीडिओ कॉन्फ्रेंस में स्पष्ट कहा कि बज़ क्रियेट कीजिए। ऐसी बातें प्रचार व्यवसाय को भाती है। बाज़ार की ताकतों ने राजनेताओं को यह घुट्टी पिला दी है कि प्रचार की आंधी से चुनाव जीते जा सकते हैं। यह कोई याद नहीं दिलाता कि पिछली अशोक गहलोत की सरकार ने फिर कुर्सी पाने की ताबड़तोड़ में प्रचार के भ्रष्टाचार का जो अंबार खड़ा किया उस पर मतदाता की समझ भारी पड़ी थी। बाज़ार के सौदागरों ने नई सरकार को भी प्रचार के चमक-दमक की वही राह दिखा दी है जिस पर होर्डिंग्स वही है, केवल राजनेताओं के चित्र बदले हुए हैं। जनकल्याण का अर्थ होता हैनिरंतरता, निगरानी, जवाबदेही और परिणाम। इसके विपरीत, ईवेंट-आधारित शासन का मूल तत्व होता है दिखावा, सुर्खियां और छवि-प्रबंधन। सड़क, स्कूल, अस्पताल, पानी, स्वच्छता, पोषण, रोजगार जैसे क्षेत्रों में सुधार का असर महीनों-सालों में दिखता है; जबकि एक भव्य कार्यक्रम का प्रभाव कैमरों की चमक तक सीमित रहता है। यही कारण है कि प्रदर्शनकारी शासन त्वरित संतोष देता है। उसके नेताओं को तालियां, प्रशासन को फोटो-ऑप्स और सत्ता को कथानक (नैरेटिव) मिल जाता है। परिणामस्वरूप, लोक-कल्याण का वास्तविक काम पीछे छूट जाता है।

भ्रष्टाचार का पोषण प्रशासनिक शिथिलता से होता है। जब शासन का केंद्र बिंदु परिणाम नहीं, बल्कि प्रस्तुति बन जाए, तो भ्रष्टाचार के लिए उर्वर भूमि तैयार होती है। ईवेंट-आधारित मॉडल में ठेके, टेंट, लाइटिंग, विज्ञापन, ब्रांडिंग, यात्रा और आतिथ्य, इन सबमें त्वरित भुगतान, कम पारदर्शिता और आपात निर्णयों की खूब गुंजाइश रहती है। यह कम समय-अधिक खर्च का वह रास्ता है जहां कमीशन संस्कृति सहज ही फलती-फूलती है। इसके विपरीत, किसी स्कूल की गुणवत्ता सुधार या प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की कार्यक्षमता बढ़ाने में निरंतर निरीक्षण, ऑडिट और सामुदायिक सहभागिता चाहिए जो ईवेंट की तुलना में कम आकर्षक होती है। कार्यपालिका की शिथिलता इसी बिंदु से जन्म लेती है। अधिकारियों का मूल्यांकन परिणामों से नहीं, बल्कि कार्यक्रमों की सफलता या कवरेज से होने लगता है। ऐसे में फील्ड वर्क गौण हो जाता है। फाइलें चलती हैं, प्रस्तुतियां बनती हैं, पर निगरानी कमजोर पड़ जाती है। जवाबदेही का तंत्र ढीला हो जाता है और भ्रष्टाचार सिस्टम की रग-रग में घुस जाता है। मीडिया, प्रचार और नैरेटिव का जालएक खतरनाक खेल है जिसे बाज़ार की लफंगी ताकतों ने जबरदस्त तरीके से साध रखा है। भले ही मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ बता कर इतराया जाए, पर जब शासन का उद्देश्य केवल मीडिया में बने रहना बन जाए, तो सत्ता-मीडिया संबंध विकृत हो जाता है। विज्ञापन और प्रायोजित सामग्री के सहारे सकारात्मक कवरेज सुनिश्चित की जाती है, जबकि ज़मीनी सच्चाइयों-अधूरी योजनाओं, गुणवत्ताहीन निर्माण, सेवाओं की कमीके हालात को हाशिये पर धकेल दिया जाता है। इस नैरेटिव-निर्माण में आंकड़ों की बाज़ीगरी, चयनित उपलब्धियां और आलोचनाओं का दमन शामिल हो जाता है। नतीजा यह होता है कि किसी दैनिक अखबार में किसी दिन सत्ता के नेतृत्व की उपलब्धियों के 13 पूरे पेजों के विज्ञापनों से नागरिकों को काम हुआ का भ्रम मिलता है, जबकि वास्तविकता अलग होती है। ईवेंट-शासन संस्थाओं को कमजोर करते हैं। दुर्भाग्य से संस्थागत क्षरण और लोकतांत्रिक नुकसान अब किसी को नजर नहीं आते।नीति निर्माण में विशेषज्ञता और डेटा का स्थान नारे ले लेते हैं। संसद/विधानसभाओं में बहस की जगह हंगामों के बीच घोषणाएं हावी हो जाती हैं। स्थानीय निकाय, जो जनकल्याण की रीढ़ होते हैं, उपेक्षित रहते हैं, क्योंकि वहां स्थानीय राजनीति के पचड़े होते हैं और उनकी उपलब्धियों की जमीनी हक़ीकत नागरिक रोज महसूस करते हैं जो किसी मंच-सज्जा से झुठलाई नहीं जा सकती। लोकतंत्र में नागरिक लाभार्थी नहीं, हितधारक होते हैं। लेकिन जब शासन प्रदर्शन में बदल जाए, तो नागरिक दर्शक बन जाते हैं। वे आमंत्रित तालियां बजाने वाले हो जाते हैं। वे सवाल न पूछने वाले नागरिक बना दिए जाते हैं। यह व्यवस्था किसी को नहीं चुभती, क्योंकि सभी के लिए यह सुभीते वाली होती है। संसाधनों की बर्बादी और लागत पर बुद्धिजीवियों का भी ध्यान नहीं जाता है। वे भी अपने-अपने ईवेंट में व्यस्त रहते हैं। ईवेंट और प्रचार पर किया जाने वाला धन यदि स्कूलों के शिक्षकों के प्रशिक्षण, अस्पतालों में उपकरण, जल-प्रबंधन या रोजगार-सृजन के कामों पर लगे, तो स्थायी लाभ मिल सकता है। कोई यह कहने वाला नहीं मिलता है कि शासन की प्राथमिकताएं बदल जाने का दीर्घकालिक नुकसान अंततः समाज को ही होता है। गरीबी के चक्र, स्वास्थ्य संकट, शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट को नज़रन्दाज़ करते हुए भविष्य की कीमत पर सत्ता अपने वर्तमान को चमकाने का प्रयास कर रही है। इस व्यवस्था में समाज में आर्थिक असमानता और नागरिकों में बेचैनी बढ़ती है, अपराधों का बोलबाला होता है। बड़ा नुकसान जवाबदेही के तंत्रों के क्षय का होता है। ईवेंट-शासन में जवाबदेही धुंधली हो जाती है। लक्ष्य स्पष्ट नहीं होते, समय-सीमा ढीली रहती है और मापन के पैमाने बदल दिए जाते हैं। कितने कार्यक्रम हुए की गणना वीडियो कॉन्फ्रेंसों के जरिए होती है। सार्वजनिक सेवाओं में कितना सुधार हुआ की कोई गणना नहीं होती। कोई पूछता भी नहीं। महालेखाकार की ऑडिट रिपोर्टें अनसुनी रह जाती हैं। शिकायत-निवारण तंत्र निष्प्रभावी हो जाते हैं। प्रचार से असफलताओं को ढक दिये जाने वाले निज़ाम में सुधार की प्रेरणा की कल्पना कैसे की जा सकती है! ऐसे में सामाजिक और लोकतान्त्रिक संस्थाओं पर से विश्वास उठने लगता है। सरकार और नागरिकों के बीच विश्वास ही शासन की पूंजी होती है। बार-बार के वादे, भव्य घोषणाएं और ज़मीनी नाकामी इस विश्वास को क्षत-विक्षत कर देती हैं। लोग व्यवस्था से विमुख होते हैं, निराशा और आक्रोश बढ़ता है। कानून को धता बताई जाने लगती है। अपराध सामान्य चलन बन जाता है। यह सब मिल कर अंततः सामाजिक ताने-बाने और लोकतांत्रिक स्थिरता-दोनों के लिए खतरनाक हो जाता है।

ईवेंट-लोकतान्त्रिक शासन का विकल्प नहीं हो सकते। सत्ता में बैठे राजनेताओं को याद रखना होगा कि इतिहास मंच-सज्जा नहीं, परिणाम लिखता है। शासन को फिर से सेवा, सत्य और जवाबदेही के अपने मूल कर्तव्य की ओर लौटने से ही लोकतंत्र फल-फूल सकता है। यही लोकतंत्र की रक्षा और राष्ट्र के भविष्य का एकमात्र मार्ग है।

ऐसा नहीं है कि समाधान की कोई दिशा न हो। परिणाम-आधारित शासन के लिए ज़मीन तैयार करनी होगी। इसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति और नागरिक दबाव साथ हो तभी बात बन सकती है। शासन में परिणाम-आधारित मूल्यांकन से ऐसा हो सकता है। अधिकारियों और विभागों का आकलन स्पष्ट, मापने योग्य परिणामों से हो, जैसे सीखने के स्तर, स्वास्थ्य संकेतक, सेवा-डिलीवरी समय आदि। सरकारी खर्चों में पारदर्शिता हो। ईवेंट और प्रचार व्यय पर सीमा तय हो और सभी खर्च सार्वजनिक डैशबोर्ड पर साफ-साफ दिखें। समयबद्ध ऑडिट, सामाजिक ऑडिट और स्थानीय समुदाय की भागीदारी अनिवार्य हो। यहां मीडिया की जिम्मेदारी आती है। उसे विज्ञापन-समाचार की स्पष्ट रेखा खींचनी होगी और ज़मीनी रिपोर्टिंग की अहमियत समझनी होगी। स्थानीय निकायों के काम काज की निगरानी में नागरिकों की भागीदारी बनानी होगी। वर्तमान चुनावी व्यवस्था के बाहर भी कुछ करना होगा। कानूनी जवाबदेहीभी जरूरी है भ्रष्टाचार और लापरवाही पर त्वरित दंड मिले और व्हिसलब्लोअर को सुरक्षा मिले। मगर असली बात होगी नागरिक जागरूकता। नागरिक सवाल पूछें और खड़े होकर कह सकें कार्यक्रम नहीं, परिणाम दिखाइए। ईवेंट-लोकतान्त्रिक शासन का विकल्प नहीं हो सकते। सत्ता में बैठे राजनेताओं को याद रखना होगा कि इतिहास मंच-सज्जा नहीं, परिणाम लिखता है। शासन को फिर से सेवा, सत्य और जवाबदेही के अपने मूल कर्तव्य की ओर लौटने से ही लोकतंत्र फल-फूल सकता है। यही लोकतंत्र की रक्षा और राष्ट्र के भविष्य का एकमात्र मार्ग है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अरावली पर्वत श्रृंखला: अस्तित्व का संकट और भविष्य

अशोक कुमार

अरावली पर्वत श्रृंखला न केवल भारत की, बल्कि दुनिया की सबसे प्राचीन वलित पर्वत श्रेणियों में से एक है। भूवैज्ञानिक दृष्टि से यह हिमालय से भी कहीं अधिक पुरानी है। आज, 2025 के परिप्रेक्ष्य में, अरावली केवल एक भौगोलिक संरचना नहीं रह गई है, बल्कि यह उत्तर भारत के करोड़ों लोगों के लिए अस्तित्व की जीवन रेखा बन चुकी है। इसे "दिल्ली-एनसीआर के फेफड़े" कहा जाता है, लेकिन वर्तमान में यह फेफड़े शहरीकरण, अवैध खनन और प्रशासनिक अनदेखी के कारण बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो रहे हैं।

अरावली थार मरुस्थल की उड़ती हुई रेत को गंगा के उपजाऊ मैदानों और दिल्ली-एनसीआर की ओर बढ़ने से रोकने के लिए एक प्राकृतिक दीवार का कार्य करता है। यदि यह पहाड़ियाँ गायब हो गईं, तो उपजाऊ कृषि भूमि मरुस्थल में बदल जाएगी। अरावली की दरारयुक्त चट्टानी संरचना वर्षा जल को जमीन के नीचे भेजने के लिए एक स्पंज की तरह काम करती है। गुरुग्राम, फरीदाबाद और दिल्ली के गिरते भूजल स्तर के बीच, अरावली ही एकमात्र माध्यम है जो एक्विफर को रिचार्ज करता है। एनसीआर क्षेत्र दुनिया के सबसे प्रदूषित क्षेत्रों में शुमार है। अरावली के घने जंगल कार्बन डाइऑक्साइड को सोखने और ऑक्सीजन छोड़ने का प्राथमिक स्रोत हैं। यह क्षेत्र तेंदुओं, नीलगाय, सियार, धारीदार लकड़बग्घा और पक्षियों की सैकड़ों दुर्लभ प्रजातियों का प्राकृतिक आवास है। यह राजस्थान के सरिस्का से लेकर हरियाणा के असोला भट्टी तक वन्यजीवों के लिए एक सुरक्षित गलियारा प्रदान करता है।

राजस्थान में अरावली का विस्तार सबसे अधिक है, लेकिन यहाँ यह माफियाओं के निशाने पर है। 2018 में सुप्रीम कोर्ट में पेश की गई एक रिपोर्ट ने देश को झकझोर दिया था, जिसमें बताया गया था कि राजस्थान में अरावली की 31 पहाड़ियाँ पूरी तरह गायब हो चुकी हैं।

2024-25 के आंकड़ों के अनुसार, अवैध खनन की यह समस्या और गंभीर हुई है। पहाड़ियों के समतल होने के कारण धूल भरी आंधियों की तीव्रता अब साल के अधिकांश समय दिल्ली को प्रभावित करती है। हरियाणा के गुरुग्राम और फरीदाबाद जिलों में स्थिति और भी विकट है। यहाँ पहाड़ियों को काटकर आलीशान फार्महाउस और अवैध रिहायशी कॉलोनियाँ बनाई जा रही हैं। अरावली नोटिफिकेशन (1992) के बावजूद, जमीनी स्तर पर नियमों का उल्लंघन आम है। अरावली को बचाने के मार्ग में आज कई नई और जटिल चुनौतियां खड़ी हैं: भवन निर्माण के लिए पत्थर और रेत की मांग ने अरावली को छलनी कर दिया है। रात के अंधेरे में डायनामाइट से पहाड़ों को उड़ाया जाना पारिस्थितिक तंत्र को अपूरणीय क्षति पहुँचा रहा है।

दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर और दिल्ली-वड़ोदरा एक्सप्रेसवे जैसे बड़े प्रोजेक्ट्स के कारण पहाड़ियों के बड़े हिस्से को काटा गया है। इसके अलावा, एनसीआर की बढ़ती जनसंख्या के दबाव में जंगलों को समतल मैदान में बदला जा रहा है। अक्सर 'वन' की परिभाषा को लेकर विवाद होता है। हाल के वर्षों में वन संरक्षण संशोधन अधिनियम को लेकर चिंताएं जताई गई हैं, जिससे अरावली के गैर-वर्गीकृत वन क्षेत्रों पर विकास कार्यों का खतरा मंडराने लगा है।

अरावली के मूल पेड़ों जैसे ढाक, खैर, और बबूल की जगह विलायती कीकर ने ले ली है। यह प्रजाति भूजल को तेजी से सोखती है और स्थानीय वनस्पतियों को पनपने नहीं देती।

अरावली को बचाने के लिए वर्तमान में तीन स्तरों पर लड़ाई लड़ी जा रही है:सुप्रीम कोर्ट ने बार-बार कड़ा रुख अपनाते हुए स्पष्ट किया है कि "अरावली में कोई भी गैर-वानिकी गतिविधि नहीं होगी।" कोर्ट ने हरियाणा सरकार को खोरी गाँव जैसे अतिक्रमण हटाने और वन भूमि को पुनर्जीवित करने के सख्त निर्देश दिए हैं।

भारत सरकार ने अरावली के किनारे 1,400 किलोमीटर लंबी और 5 किलोमीटर चौड़ी अरावली ग्रीन वॉल बनाने की योजना शुरू की है। इसका उद्देश्य पोरबंदर से पानीपत तक वृक्षारोपण के माध्यम से मरुस्थलीकरण को रोकना है।

अरावली बचाओ सिटिज़न मूवमेंट, अरावली बचाओ जैसे संगठनों ने लोगों को जागरूक किया है। युवाओं और पर्यावरणविदों द्वारा सोशल मीडिया और पदयात्राओं के माध्यम से सरकार पर दबाव बनाया जा रहा है कि अरावली को "इको-सेंसिटिव जोन" के रूप में पूरी तरह सुरक्षित किया जाए।

अरावली को केवल कागजी कानूनों से नहीं बचाया जा सकता। इसके लिए एक समठा वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है: सैटेलाइट इमेजरी और ड्रोन के जरिए अरावली की सीमाओं का सटीक सीमांकन किया जाए ताकि एक इंच भूमि पर भी कब्जा न हो सके।विदेशी पेड़ों को हटाकर स्वदेशी प्रजातियों के जंगल विकसित किए जाएं जो जल संचयन में सहायक हों। अरावली को बिना नुकसान पहुँचाए ट्रैकिंग और वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी के लिए विकसित किया जाए। जब स्थानीय लोगों को पर्यटन से रोजगार मिलेगा, तो वे स्वयं इन पहाड़ियों के रक्षक बनेंगे। जिन क्षेत्रों में खनन के कारण गहरे गड्ढे हो गए हैं, वहां जल संचयन की झीलें बनाई जाएं और गायब हुई पहाड़ियों के स्थान पर कृत्रिम घने वन विकसित किए जाएं।

अवैध खनन में लिप्त माफियाओं के खिलाफ फास्ट ट्रैक कोर्ट में मामले चलाए जाएं और उनकी संपत्तियां कुर्क करने जैसे कड़े प्रावधान हों।

अरावली पर्वत श्रृंखला कोई निर्जीव पत्थर का ढेर नहीं है, बल्कि उत्तर भारत का सुरक्षा कवच है। आज हम जिस ताजी हवा और पीने योग्य पानी के लिए संघर्ष कर रहे हैं, उसकी चाबी अरावली के पास है। यदि हमने स्वार्थ और विकास की अंधी दौड़ में अरावली को खो दिया, तो आने वाली पीढ़ियां एक मरुस्थलीय और जहरीली हवा वाले भारत में सांस लेने को मजबूर होंगी। अरावली को बचाना अब केवल पर्यावरण प्रेमियों का शौक नहीं, बल्कि हम सबकी सामूहिक राष्ट्रीय जिम्मेदारी है।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर,
गोरखपुर विश्वविद्यालय,
विभागाध्यक्ष राजस्थान
विश्वविद्यालय जयपुर

रणकपुर जवाई बांध फेस्टिवल 2025 का समापन

- **फेस्टिवल में रोचक प्रतियोगिताओं और हॉर्स शो ने रोमांचित किया**
- **सूर्य मंदिर के समीप आयोजित कार्यक्रम में मामे खान के सुरों ने समा बांधा**

पाली, (निसं)। मारवाड़-गोड़वाड़ की सांस्कृतिक विरासत को विश्व पटल पर स्थापित करने की मंशा से जिला प्रशासन पाली, पर्यटन विभाग राजस्थान तथा नगरपालिका सादड़ी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय रणकपुर जवाई बांध फेस्टिवल 2025 का रंगारंग समापन हुआ।

इस अवसर पर महोत्सव में पर्यटक वन्यजीवों को प्राकृतिक पर्यावास में देखकर रोमांचित हो उठे। इधर, रणकपुर स्थित हॉट एयर बैलूनिंग आयोजित हुआ। हेलीपैड ग्राउंड पर ही आयोजित रोचक प्रतियोगिताओं में भी सैलानियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। फेस्टिवल के दिन हॉर्स शो आकर्षण का केंद्र रहा। बड़ी संख्या में पहुंचे पर्यटकों और स्थानीय लोगों ने सजे धजे घोड़ों के करतबों पर दांतों तले उंगली दबा ली। हॉर्स पोलो के दौरान दर्शकों का उत्साह चरम पर रहा। वहीं दिनभर चली रोचक प्रतियोगिताओं और हॉर्स शो ने भी सैलानियों को रोमांचित किया।

मिस गोडवाड़ प्रतियोगिता के विजेता को अधिकारियों ने पुरस्कृत किया।

महोत्सव में रस्साकस्सी की महिला की प्रथम टीम में सुमन, सोनल, सीता, रेशमा, आशवंती, लक्ष्मी, आकांक्षा, दीपिका, कंचन, ललिता, चम्पा प्रथम रही। इसी प्रकार पुरूष की रस्साकस्सी टी में रमेश चंद परिहार, रानूसिंह, रामेश्वर फिरोदा, बाबूलाल माली, ललित माली, मुकेश देवासी, पप्पु कुमार, जावेद टांक, भंवरलाल, नकुल कश्यप व जीतू चौधरी टीम प्रथम रहे। गोडवाड श्री में प्रशांत वर्मा प्रथम एवं मिस गोडवाड़ में शारदा कुमार प्रथम रही। मूछ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर विक्रमसिंह, नरसिंह चौहान प्रथम रहे, द्वितीय स्थान पर संदीप राठौड़, तृतीय स्थान पर पोकरलाल सोलंकी, धीरेन्द्र सिंह, देवा मारवाडी तृतीय रहे। साफा बांध प्रतियोगिता में संजय मेंशन प्रथम, तेजवंत सिंह चौहान द्वितीय, तृतीय डिकेन्द्र सिंह सिसोदिया, यूधिष्टर चौहान, मादाराम तृतीय रहे। चम्मच दौड़ में आदित्य सिंह प्रथम, रमेश द्वितीय व पदमिनी तृतीय नम्बर पर रही तथा फोटोग्राफी प्रतियोगिता में राजकुमार सोनी प्रथम, शुभम सोनी द्वितीय एवं आदित्य कंसारा तृतीय रहे। मटका दौड़ में प्रथम गुणिता देसूरी, द्वितीय कन्या सोनाणा, तृतीय शारदा रही, इसके साथ ही अन्य स्पर्धाएं भी आयोजित हुई।

फेस्टिवल में जिला कलैक्टर सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के तत्वावधान में फोटोग्राफी प्रतियोगिता भी हुई। इसमें जिले भर के फोटोग्राफर्स ने प्राकृतिक, वाइल्डलाइफ, कल्चर व सांस्कृतिक विषय पर फोटोग्राफी कर प्रविष्टियां जमा कराई। इन सभी फोटोग्राफ्स की यहां प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसे दर्शकों ने देख के सराहा।

फेस्टिवल के अंतिम दिन रात सूर्य मंदिर के समीप आयोजित कार्यक्रम में मामे खान के सुरों ने समा बांध दिया। मामे खान ने पधारों मारे देश गीत से अपनी प्रस्तुति की शुरुआत की। साथ ही रामचन्द्र अवतार लियो.., वंदे मातरम...., जब देखु बन्ने री लाल पीली अंखिया....., केशरिया बालम..., चमचम चमके चुनडी बनजारा रे.. आदि गीतों की प्रस्तुति दी। उसमें दर्शकों का उत्साह देखते ही बना।

इस अवसर पर पशुपालन, डेयरी, देवस्थान विभाग कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत, संभागीय आयुक्त डॉ प्रतिभा सिंह, जिला कलक्टर एलएन मंत्री, प्रशिशु आईएएस बिरजु गोपाल, अतिरिक्त जिला कलक्टर डॉ बजरंगसिंह, बाली अतिरिक्त जिला कलैक्टर शेलेन्द्रसिंह, उपखण्ड अधिकारी देसूरी सिद्धार्थ सांदु, नगरपालिका ईओ सादडी, संयुक्त निदेशक पर्यटन भानु प्रताप, सेलो ग्रुप के प्रतिनिधि नरेश ओझा, पर्यटन विभाग की सहायक निदेशक सरिता फिडौदा एवं अन्य जनप्रतिनिधि बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

बोर्ड परीक्षाओं से पहले स्कूलों को व्याख्याता नहीं मिलेंगे

- **वर्तमान में राज्य के उच्च माध्यमिक स्कूलों में व्याख्याता के 18649 पद रिक्त चल रहे हैं**
- **व्याख्याता नहीं होने से सेकंड ग्रेड और थर्ड ग्रेड शिक्षकों को 11वीं -12वीं कक्षा का बकाया कोर्स पूरा करने की जिम्मेदारी सौंपी गई**

बीकानेर, (निसं)। 9वीं से 12वीं कक्षा की वार्षिक परीक्षाओं की डेट सीट घोषित कर दी गई है। 10वीं व 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं 12 फरवरी से और 9वीं व 11वीं कक्षा की 7 मार्च से शुरू होगी, लेकिन स्कूलों को व्याख्याता वार्षिक परीक्षा से पहले मिलने संभव नहीं होंगे। अभी तक व्याख्याताओं की वरिष्ठता तैयार नहीं हुई है। मंडल स्तर पर अस्थाई से स्थाई वरिष्ठता तैयार होने के बाद माध्यमिक शिक्षा निदेशालय स्तर से डीपीसी की तैयारी शुरू होगी, जिसमें अभी समय लगेगा। पिछले 3 साल से वरिष्ठ अध्यापक से व्याख्याता पदों की डीपीसी बकाया होने से रिक्त पदों का ग्राफ साल दर साल बढ़ता जा रहा है।

वर्तमान में राज्य के उच्च माध्यमिक स्कूलों में व्याख्याता के 18649 पद रिक्त चल रहे हैं। व्याख्याता नहीं होने से ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के अनेक स्कूलों में सेकंड ग्रेड और थर्ड ग्रेड शिक्षकों को 11वीं -12वीं कक्षा का बकाया कोर्स पूरा करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने 31 जनवरी से पूर्व बकाया कोर्स पूरा करने के निर्देश दिए हैं।

सीताराम जाट, निदेशक माध्यमिक शिक्षा बीकानेर का कहना है कि कार्मिक विभाग के नियमानुसार 1 अप्रैल की स्थिति के आधार पर कार्यरत वरिष्ठ अध्यापकों की वरिष्ठता बनवाई जा रही है। इसके बाद डीपीसी की जाएगी।

5वीं-8वीं बोर्ड परीक्षाओं का टाइम टेबल जारी

बीकानेर, (निसं)। प्रारंभिक शिक्षा विभाग ने कक्षा 5वीं और कक्षा 8वीं बोर्ड एग्जाम का कार्यक्रम जारी कर दिया है। शिक्षा पूर्णता प्रमाण पत्र परीक्षा (कक्षा 8) और प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन परीक्षा (कक्षा 5) का आयोजन आगामी वर्ष फरवरी से मार्च के बीच में किया जाएगा।

आठवीं के स्टूडेंट्स को होली के अवकाश में भी तैयारी करनी होगी, जबकि पांचवीं के स्टूडेंट्स के एग्जाम पहले ही खत्म हो जाएंगे। सिर्फ संस्कृत स्कूल सहित विशेष स्कूलों में ही पांचवीं की तृतीय भाषा के एग्जाम होंगे।

शिक्षा निदेशालय की ओर से जारी आदेश के अनुसार कक्षा 8वीं की परीक्षाएं 19 फरवरी 2026 से शुरू होकर 4 मार्च तक चलेंगी, जबकि कक्षा 5वीं की परीक्षाएं 20 फरवरी 2026 से 5 मार्च तक आयोजित होंगी।

शिक्षा विभाग ने सभी जिला शिक्षा अधिकारियों और संबंधित संस्थानों को निर्देश दिए हैं कि परीक्षा से जुड़ी सभी व्यवस्थाएं समय रहते पूरी की जाएं। परीक्षा कार्यक्रम में किसी भी प्रकार के परिवर्तन की सूचना विभागीय पोर्टल के माध्यम से दी जाएगी।

कंटेनर में भरे गौवंश को मुक्त कराया

टोंक, (निसं)। निवाई क्षत्र में गौ तस्करी के खिलाफ पुलिस और गौ सेवादल की संयुक्त टीम ने कार्रवाई कर सोमवार रात्रि को दो दर्जन गौवंश से भरे एक कंटेनर को जब्त किया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार सोमवार रात्रि को गौवंश सेवादल को गांव चिकाना क्षेत्र से गौवंश से भरा कंटेनर निकलने की सूचना मिली, जिसके बाद उन्होने कंटेनर का पीछा कर निवाई थाना क्षेत्र स्थित दशहरा मैदान के पास उसे घेरकर कर रोक लिया तथा थाना पुलिस को सूचना देकर मौके पर बुलाकर कंटेनर व आरोपी चालक हनीफ खां (30) पुत्र चाव खां, निवासी जमातगढ़, थाना पुनहाना, जिला नूंह (हरियाणा) को पुलिस के हवाले कर दिया, जिसके बाद निवाई थाना पुलिस ने कंटेनर को जब्त कर क्रेन की मदद से सभी गौवंश को सुरक्षित गौशाला भिजवाया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ प्रकरण दर्ज कर कार्रवाई प्रारम्भ की।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 24 दिसम्बर, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, धनिष्ठा नक्षत्र गुरूवार प्रातः 8:18 तक, हर्षण योग दिन 4:02 तक, विष्टि करण दिन 1:12 तक, चन्द्रमा सायं 7:46 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मकर, मंगल-धनु, बुध-वृश्चिक, गुरू-मिथुन, शुक्र-धनु, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग प्रातः 8:18 से आरम्भ होगा। भद्रा आज दिन 1:12 तक रहेगी। पंचक सायं 7:46 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:52 तक, शुभ 11:09 से 12:26 तक, चर 3:01 से 4:18 तक, लाभ 4:18 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:17, सूर्यास्त 5:35 तक

मेष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। आज नवीन कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

कन्या
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

तुला
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित धन प्राप्त होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्य से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ
आज समय अनर्गल कार्यों में व्यतीत होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाए